

श्री ३ वसुंधादे
वीणा वाह पुष्प
क ३३ हा पुष्प

आशा भट्ट

५१६

I

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीवसुंधारणे ॥ कृपे दितेन विधिना परिपथमानाया धारया विविधिरत्नसुवर्णम
यी पूर्ण करोति भवनं सहस्रैव सर्वतां सर्वलोकजननीं पुनमाप्ति भग्या ॥ त्वां देवी सर्वगुणरत्न
॥ १ ॥ महानिधानं सत्त्वार्थं कार्यधनधान्यसमृद्धिहेतोः ॥ तारुण्यं हारमकुलमनिकल्पवद्भावे हो
त्रे लोकनाथं वसुंधा वसुंधा नामा ॥ इत्येवमेव भयमप्युत्तरोक्तदेवाः दारिद्र्यदुःखवृणो ह
रतामोषधीनीं सौभाग्यदुपगुणपूष्करजोत्रवरणि सर्वददति तव पादसूक्तं नमामि ॥ १ ॥

कुशुतरूपपरिपथमानाः दुष्मीददति विपुलां सुगतां पभोगां तां धारणीं सकरसत्त्वहिते कचिता
भग्या नमामि सत्तर्त वसुंधारसंज्ञाः ॥ ॥ येवमप्यापुनमेकस्मैकस्मै समये भगवां कोशायां
महानाग्यीं विहरति स्मः ॥ ॥ कंठकसूत्रे के महानवनवर्षा घोषिए एमे महताभिश्च संघेन
साधु संवत्सरे महानवनक रसंघे ॥ ॥ कोटि सत्त्वैः मह सत्त्वैः सर्वबुद्धगुणसमवागतैः ॥ तत्र खड्गभ
जवांतस्या वेदायां इमां मेव पर्वदितै पर्वदितैः कुरमाणि सर्वददति ॥ ॥ दूःखार्तिवपरिशोषनीना
मधर्मपम्यायं देशपतिस्मः ॥ ॥ आदौ कृपाणां मध्यकृपाणां पर्ववसाकृपाणां स्वर्थस्वयार्जने के

ॐ ॥ २ ॥ वही परिपुर्ण परिपुष्ट पर्व वशात् वसु चर्ष्य संप्रकाशयति स्म ॥ तेन खलु पुनः समयेन कोशायां मह
नशाया सूचये नाम हं वतिः पुति वशां नि स्म ॥ उपशा ने दिपो वशा न मानसो वसु पुत्रो व
हृदहित ए वसु भव्य परिपुष्ट सस्यनः आहु मस्त आहुः तेन खलु पुनः समयेन येन भगवा
स्तेन उपसंक्रांत उपसंक्रम्यः भगवतः पादो हिर सावदिता भगवन् संयेक सत सहस्र
प्रदक्षिने कुत का नो यवी दतः ॥ येका के निवर्णीः सूचये नाम हं वति भगवन् मेतद वो
चतः ॥ पृष्ट पमहं भगवन् तथा गत महर्तं सस्य क्य बुधं कचि देव पुत्रे हं सये मे भगवां

न वका संकृष्यात् वया कट लाप ॥ पवं मूके भगवां सूचये हं वति मेतद वो चतः ॥ पृष्ट पं
गृह पते पद्य देवा कं भव्य हर्तं तत् पुन व्याकट होत चितं मा एध पिबे ॥ येवं मूके सूचये ग
ह पतिः साधू भगवन् त्रिभि भगवन्तो वचनं पुति प्रभ भगवन् मेतद वो चतः ॥ कथं भगव
त्कृष्ट पुत्रो वा कृष्ट दूहिता वा दरिद्रो भूत्वा अदरिद्रो भवति ॥ व्यापित प्रभूत्वा अया धितो भ
वति ॥ अथ खलु भगवां ज्ञान ने वसु चन्दो गृह पति मेतद वो चतः ॥ दरिद्रो हं भगवन् दरिद्रो हं
सुगर् ॥ वसु वो यो वसु पुत्रो वसु दूहितो वसु भव्य परिपुष्ट सस्यनः ॥ न हि सस्य भगवान्

॥ ३ ॥

संपर्क्यां येन दिट्टि सुत्वा मुद रिटो भवेत् ॥ आधिः तप्यसत्वा मुद्याधिना भवेत् ॥ बहु धन
धां न्य रत्न सुवर्ण को सुको कृ गा ए भवेत् ॥ प्रिया मना वा म सम नो ह द र्श नीया प्य भवेत् ॥
स वचन यो महा दान यन य प्य मुदी एण हि ट एण सुवर्ण धन धां न्य को स को कृ गा ए प्य भवेत् ॥
मणि मू की व गु वे दु र्ग्य सुं र सि हा पु बा द दु प र ज त ता मु म र क ट प म र ग स म द्वा प्य भवेत् ॥
सु प्र ति कि त गृ ह भो यो पृ थ द र द रि का दा सी दा स क र्म क र्म न स म्य त्रा कृ र्वा च
भवेत् ॥ ये वं मू के भग वा क र्वा सुं प रि पू र के न पु न्न प्य र न स च न्द्रे गृ ह प ति मे त द वी च र ॥

॥ ३ ॥

अथी कृ ह पूर्व भूत पु र्म म ती ले ध न्य र्वा य प र क र्मे पू यं दा सी ले न क र्हे न ते न स म ये न व ज ध र सा
ग र नि र्वा को ना म न था ग लो ह स म्य क र्म वृ द्धो लो क उ द या दि वि द्या च र ण स म्य त्रः सु ग ले लो क वि
न त्त रः पू रू ष द म्य सा र थिः शा स्त्रा दे वा रां च म रू षा रां वृ द्धो भग वा न्ना म्ना के द्रि का म पा कृ
ह पूर्व व र्म धा ए ना म धा र णी प्यु त्वा उ द र्शि वा धा रि ता वा चि ता दे पि ता व र्म वा प्ता अ नू मो दि ता
प र भ य प्य वि ल रे ण शं पु का शि ता अ ह म च न्द्रि ते कृ ह पूर्व धा र णी त था भा वि ष ॥ य था आ म्ना धा

ॐ
॥५॥

नरिष्याः पुत्रावेन कृता पुत्र मानुषानविहेठयन्तिः अमानुषानविहेठयन्ति। देवानविहेठयन्ति। आवा
नविहेठयन्ति। यक्षानविहेठयन्ति। असुरानविहेठयन्ति॥ ओजानविहेठयन्ति॥ अपस्मरकानविहे
ठयन्ति॥ गन्धर्वानविहेठयन्ति॥ किन्नरानविहेठयन्ति॥ सहोदगानविहेठयन्ति॥ पुननानविहे
ठयन्ति॥ कटपुननानविहेठयन्ति॥ सर्वगुह्यनविहेठयन्ति॥ सर्वदेवानविहेठयन्ति॥ इन्द्रिप
ज्ञानविहेठयन्ति॥ सर्वाहएनविहेठयन्ति॥ येषं पावपूष्याहाः॥ कृताहा॥ पञ्चाहा॥ त्रि
आहा॥ त्रिभुवाहा॥ मूलाहा॥ गन्धाहा॥ धूपाहा॥ दीपाहा॥ माहाहा॥ आहूया

वत्स
४॥

हाहा॥ ओजाहाहा॥ वेदाहाहा॥ एसाहाहा॥ रजाहाहा॥ मा-साहाहा॥ मेघहाहा॥ असु-याहाहा॥ उ
घ्रिहाहाहा॥ धुक्काहाहा॥ जीविताहाहा॥ सर्वेनविहेठयन्ति॥ येषं पावद्विषहाहाहा॥ मूत्राहाहा॥
वेलाहाहा॥ हिंसनकाहाहा॥ क्रेदाहाहा॥ किन्नाहाहा॥ स्वत्रिभुवाहाहा॥ वान-महाहा॥ श्रेष्ठाहाहा॥
उद्विषहाहा॥ अनूद्विषहाहा॥ उद्विषिनाहाहा॥ इत्याहाहा॥ गर्भाहाहा॥ सर्वेनविहेठयन्ति॥ स
र्वदाकि-यो-नविहेठयन्ति॥ दयानविहेठयन्ति॥ ज्ञानानविहेठयन्ति॥ आवानविहेठयन्ति॥ आ

श्री
५५

बानाहा ॥ रूपाहा ॥ शूद्राहा ॥ गन्धाहा ॥ एसाहा ॥ स्पर्शाहा ॥ ग्राह्यहा ॥ नानाहा
हा ॥ विरूपाहा ॥ अनन्तरूपाहा ॥ कामरूपाहा ॥ विचित्ररूपाहा ॥ वलाहा ॥ वट्टाहा
असुखाहा ॥ विचित्राहा ॥ पात्रवद्विष्टाहा ॥ नविहेठयनि ॥ पावतेवेचरा ॥ भूचा ॥ अ
नरिहचरा ॥ पाताहचरा ॥ ज्ञा ॥ वनचरा ॥ सर्वे ॥ नविहेठयनि ॥ येतेषां समसर्व
त्वा नां च मह बजरा मूढि स्फोटनाय प्रहृष्टा महीकृद्वडो हा सर्वदूषणां शूर्वशुभ्रणां

धर्मे
५५

एष २ शेष २ सम २ वन २ रुद्र २ ५ रुद्र २ पच २ मर २ मार २ सर्वसुत्रासय २ ह्रीं २ फल २ ह्याहा ॥
यस्य च कृतपुत्रवा कृतदुहितुर्वा ॥ कृतपुत्र २ यं गुरुपतेव सुंधाए नाम धारणी आहुत्य हृदये गता ग
ह गता हृदये गता पुष्टक गता भुति ॥ मात्रा गता पर्ववा प्रा म नसा सुवर्दि चिन्तिता धारिता वा चिता हि
बिता अद्मोदिता पावर् परेभ ॥ अविष्टे ए संपुक्ता श्रीता ॥ तस्य कृतपुत्रस्य वा कृतदुहितुर्वा
दीर्घ एव मर्थापदिता यस्त्वाय २ सेमाय सुनिभाय योगसंभा एव अविष्टाति ॥ ययं मां वरं धार

५१
॥६॥

वसंधातमघाहृत्तथागतं भो हंत्यः सम्यक् संसृजेभ्यः ॥ इदं एव पुनः कृत्वा आवर्तते संसृज्या
आवर्तते ॥ सर्वतथागतानां सर्वं आवकं पूजनां सर्वं बुद्धं बोधिं सत्त्वानां सर्वं तथागता सर्वं मूढा
मनु विद्या देवतानां तेषां सर्वं पूजाभिः पूजयेत् ॥ अत एव न निचयं बुद्धिर्हृत् ॥ तस्य देवताया
र्त्तमनस्कः ॥ पुनर्दिताः प्रीतिः सोमनस्यता वाचयेत् ॥ तदा भगवता वसंधातमघाहृत्तथागतं
गम्य धनधान्यं हिरण्यं चतुर्धा तपि व्यक्तं प्रीत्या तथागतं दृष्ट्वा प्रीत्या वदुः प्रहृष्टाः प्रीत्या ध

वस
॥६॥

प्रीतिः प्रहृष्टाः प्रीत्या संघं प्रहृष्टाः प्रीत्या सर्वं आवकं पूजो प्रहृष्टाः प्रीत्याः पंचकृत्वा बहिर्धृतं मूढा म
नु विद्या देवता प्रहृष्टाः प्रीत्या धर्मभानकस्याशयेन ॥ ॐ नमो एतं त्रयाय ॥ ॐ नमो भगवते अर्धव
संधातये ॥ ॐ नमो भगवते श्रीवज्रधारसागरनिर्गोपाय तथागतायां हर्षे संसृज्यां मूढाय ॥ ॐ न
मो भगवते अक्षोभ्योप तथागतायां हर्षे संसृज्यां मूढाय ॥ ॐ नमो भगवते सर्वतथागतायां हर्षे
संसृज्यां मूढाय ॥ ॐ नमो सर्वतथागते भो धर्मीनां गतं पुत्रं पुत्रेभ्यः ॥ ॐ नमः क्षमंकरस्य तथाग
तस्य ॥ ॐ नमो वज्रधारसागरगम्भीरस्य तथागतस्य अगुणं प्राप्ते विपश्चादिभ्यः शाक्यं मूर्तिभ्यो दानं पा

ॐ
॥ १ ॥

मितापरिपूरणेनो भगवत्पुत्रः विषयिनिहसंज्ञसा मृधां च विविनसंज्ञा जिताय हतसंज्ञां वृद्धाय ॥ पुन
मोः सर्वलथा गलसंज्ञः पुनमो वंशं धरं सागारं गच्छी रं स्यां लं थं गीतो विष्णुभू प्रहया चैक कृद्वदवहो न
चः कनकसूने सिंहाया काश्यपस्य धूलै गुना ॥ शाक्यसिंहस्य वीर्येण मेरुयस्य प्रतिरूपं समधनु मेत
था गलस्य हमे मनु पदा ॥ सर्व सत्त्व हित विद्या दारिद्र्याधिदूःख व्यसना एव मोचकेभ्यः हमां वसुधा एत
मधारणी विद्यारहस्य प्रवक्ष्यामि तथा गल भाषित ह्यार्थ मनु पदान् नूतन एमि तद्यथा ॥ पुनर्दृष्टी ध

२॥

न २ धनैर्व्यर्थं बुद्धमाणे भुञ्ज्ये को हो चिन्तितो व्यादनी मनसि साधनि मनो हृष्ट साधनी ॥ साधन करि ॥ केटे
कोटं बह कोटि व्यर्थं अनन्त सर्व एवावसाहं का ए भट्टाणि निधन धां न्य वृद्धि करि चिन्तितो वत्नी समो हनी
बुद्धस्य कोट्य कोट्य गार देहनी ॥ बहस्य ते मानु मयं हट्टिः वृद्धे २ वृद्ध सत्य धर्म सत्य संघ सत्य सर्व वृद्ध
बोधि सत्त्व सत्यः बोधि प्रागृह सत्य ॥ सर्व आक पुत्र्य क वृद्ध सत्यः ब्रह्म सत्यः दृष्ट सत्यः लोक पाह सत्य ॥ ध
नदाज्ञान करि हिरं ऐ सूर्य मणि मूर्ति वज्र वेदुर्ग्य दूरे सिंहा प्रवादु गलतु प रजत मरगतः पद्म एग हनुमि
हक कर्तन सर्व दया सम हये ॥ चतुर्वर्ग विहि सह आणा प्राधि पत्य कायति ॥ यहि भगवति वंश धारणा

५१
रमिते स्वाहा ॥ कुं श्री वज्र सत्त्व हृदयाय स्वाहा ॥ कुं श्री भद्रे स्वाहा ॥ कुं श्री सुभद्रे स्वाहा ॥ कुं श्री भद्रमति स्वा
हा ॥ कुं श्री सुभद्रमति स्वाहा ॥ कुं श्री मंगले स्वाहा ॥ कुं श्री सुमंगले स्वाहा ॥ कुं श्री मंगलमति स्वाहा ॥ कुं श्री
सुमंगलमति स्वाहा ॥ कुं श्री आद्ये स्वाहा ॥ कुं श्री चन्द्रे स्वाहा ॥ कुं श्री सूर्ये स्वाहा ॥ कुं श्री चन्द्रमति स्वाहा ॥
कुं श्री सूर्यमति स्वाहा ॥ कुं श्री अहो अहो स्वाहा ॥ कुं अमले स्वाहा ॥ कुं विमले स्वाहा ॥ कुं श्री निर्मले स्वा
हा ॥ कुं श्री महानासनि स्वाहा ॥ कुं श्री चहो चहो स्वाहा ॥ कुं श्री अचहो स्वाहा ॥ कुं श्री अचपो स्वाहा ॥ ३५

न्यानि स्वाहा ॥ कुं श्री उदभेदनि स्वाहा ॥ कुं श्री उदभाषनि स्वाहा ॥ कुं श्री उत्थापनि स्वाहा ॥ कुं श्री प्रियं करि
स्वाहा ॥ कुं श्री प्रीति करि स्वाहा ॥ कुं श्री शिष्य करि स्वाहा ॥ कुं श्री शिर्व करि स्वाहा ॥ कुं श्री पुत्र करि स्वाहा
कुं श्री श्री करि स्वाहा ॥ कुं श्री धन धनि स्वाहा ॥ कुं श्री धान्य धनि स्वाहा ॥ कुं श्री धन २ स्वाहा ॥ कुं श्री धने
धन स्वाहा ॥ कुं श्री श्री मति स्वाहा ॥ कुं श्री पुत्रा मति स्वाहा ॥ कुं कुं स्वाहा ॥ कुं श्री सुदुपमहे स्वाहा ॥
कुं श्री विगतमहे स्वाहा ॥ कुं श्री विपुल गभे स्वाहा ॥ कुं श्री अक्षय मते स्वाहा ॥ कुं श्री अक्षय कोपो स्वाहा

ॐ श्री १०॥ ॐ श्री धनदे सो भ को हो स्वाहा ॥ ॐ श्री इष्ट प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व सुख प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री धनदे धन द पूडि
ने स्वाहा ॥ ॐ श्री पूजनी म स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्चना मे स्वाहा ॥ ॐ श्री अर्चना हो स्वाहा ॥ ॐ श्री अनन हो स्वा
हा ॥ ॐ श्री विनन हो स्वाहा ॥ ॐ श्री अनन हो विनन हो स्वाहा ॥ ॐ श्री धिनन हो स्वाहा ॥ ॐ श्री वि
धन हो स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन के हो स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन दु हो स्वाहा ॥ ॐ श्री विधन वि स्वाहा ॥ ॐ श्री
सुविधु हू वे स्वाहा ॥ ॐ श्री विधु हू शी हो स्वाहा ॥ ॐ श्री विगुनि विगु शिवे विगु हो स्वाहा ॥ ॐ १०॥

श्री विगु शिवे स्वाहा ॥ ॐ अं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री मं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रभं कुरे स्वाहा ॥ ॐ श्री अमोघां कुराज ॥
हू वे हो स्वाहा ॥ ॐ श्री इष्ट सिद्धि प्रदे स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रा कर्षणे स्वाहा ॥ ॐ श्री आवेश नि स्वाहा ॥ ॐ श्री
प्रवेश नि स्वाहा ॥ ॐ श्री प्रवम नि स्वाहा ॥ ॐ श्री रिरि मे स्वाहा ॥ ॐ श्री दु दु मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ध ध मे स्वा
हा ॥ ॐ श्री धि धि मे स्वाहा ॥ ॐ श्री धू धू मे स्वाहा ॥ ॐ श्री ख ख मे स्वाहा ॥ ॐ श्री खू खू मे स्वाहा ॥ ॐ श्री
लर २ स्वाहा ॥ ॐ श्री लरे लरे लारे लारे मे लर लर वि लर लर २ ॐ श्री लर लर लर लर मे लर लर लर लर
म धारणी मम सर्व सत्वा ना च इष्ट ज मे न स्वाहा ॥ श्री भगवति ॐ लारे लु लारे लु रे स्वाहा ॥ ॐ श्री भग

५१
११११

पत्र
॥

नां च सर्वशुभां परिपूरकेण मम सर्वसत्त्वानां च गृहे शुभं शूरागतम्वा। पृथिवीगतम्वा। स्थलगतम्वा। अन्तरिक्षगतम्वा। भूमिगतम्वा। स्वर्गगतम्वा। मर्त्यगतम्वा। पातालगतम्वा। समुद्रगतम्वा। सप्तद्वीपोंकगतम्वा। सर्वत्रगतम्वा। पर्वतान्कगतम्वा। भगवति वसुधारे शुभं गृहे मणिमुक्तिवज्रवेदुष्यं शुभं शिष्टं वादगतम्वा। रजतमरकतमृशोऽगस्त्यककेन पद्मएजेन्दुनीलोद्यनेकएतानि सुवर्णं रजतं तां मुहोदधानुमूहजीवादीनि वा नेकधनधान्यचतुःषष्ठीभीतिं सहस्राणि च मम सर्वसत्त्वानां च कोट्यकोट्यं गतं च सर्वोपकटणनिभं २ भूतिमाहा ॥ कुम्भीममसर्वशुभां परिपूरयत्वा ॥

ॐ श्री भुव नि स्वाहा ॥ ॐ श्री शान्त म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा भुव म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री
पू की म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा र्च म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री जय म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री विजय म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री
गु र्दी ए लि सु रे न पु र्त्त नि म हा ते जः ॥ ॐ श्री महा शान्त म ति स्वाहा ॥ ॐ श्री महा पौ की म ती स्वा
हा ॥ ॐ श्री सर्व ज न व सं क ति स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व दु ष्ट न कृ त ति स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व सु बु वि ना श
नि ह्नु क र्त्त स्वाहा ॥ ॐ श्री आ ग द्य ग द्य स म य म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री हृ द य म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री

उ प हृ द य म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री आ र्क् रे रा म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री आ धा र म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री
ॐ श्री महा पु भा व म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री धृ ति म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ स्व भा व म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ
ॐ श्री जय म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री विजय म नू स्म र स्वाहा ॥ ॐ श्री सर्व त था ग त वि ष म नू स्म र
स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र
धे स्वाहा ॥ ॐ श्री सू व स्र धे स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र सू वि स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रि स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र म
नि वि ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे रा गे ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र म ति प्रि ये स्वाहा ॥ ॐ श्री व स्र धा रे धा र

श्री
१३

ली धारणी वसुंधारणि ये स्वाहा ॥ नृ श्रीक्ष्मी ये स्वाहा ॥ नृ श्रीक्ष्मी भूतनिवासनि ये स्वाहा ॥
नृ श्रीमहाक्ष्मी भूतनिवासनि ये स्वाहा ॥ नृ श्री वसुधे नृ श्री प्रिये श्री करि धन करि धान्य करि
श्री स्वाहा ॥ नृ श्री वसुधारे श्री स्वाहा ॥ नृ श्री वसुंधारनी धारणी धारणी स्वाहा ॥ श्री समये +
सौम्य समर्थ करि महा समये स्वाहा ॥ नृ श्री धन धान्य करि समये श्री करि वसुधे रि वसुधे स्वाहा ॥
नृ श्री वसुधारे ये शो हि भगवति समं य मनस्मर सिद्धिं कुरु मे हूँ स्वाहा ॥ नृ श्री वसुंधारणि र्श्री व
रुदये सर्व धन धान्य सर्व वसु एवाहं कार सर्व श्री क्षीयादिभिः सर्वोपकारोः समुद्धि मे देहि शु

वसु
१३

नि पूर्व च भू सिद्धिं च ददाय स्वाहा ॥ नृ श्री धन धान्याय विप्रदे सर्व एत वसुधा हं कार सर्वोपकारणानि
धी महें ततो श्री वसुंधारणी प्रचो दया ये स्वाहा ॥ नृ स्वाहा ॥ अस्वाहा ॥ स्वहाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥ ह्रींः स्वाहा ॥
स्वाहाहा ॥ हाः स्वाहा ॥ नृ यान पात्रा वहे दूरागा मिनि अतुत्पन्ना नां दुवाणां मृत्यादनि दुत्पन्नाणां व
द्वि करि दिति २ इत २ आगद २ भगवति मा विहं स्व मम सर्व सत्या नां च मनो रथ परि पूरय दसभ्यो
दिभ्यो यथोदक धार परि पूरय कि महि यथा भास्करो रस्मी ना विधमय किः ॥ यथा क्षितां अनाया
य कि सर्वो वधी ॥ यथा महोष धयः सर्व रोगा नासयन्तेः धनदो वरुण औ व इन्द्रो वै अवरा स तथा ॥

श्री
१००

पथावहते मतो नृगा मिनी सिद्धि चिन्तयन्तु सत्तर्प सर्वसांप्रपद्य पथाकासं सिद्धिर्मेवलुनशंसया
मनामदानिः ॥ तद्यथा ॥ ॐ खड्ग २ खिडि २ खड्ग २ प्रथ २ मूढ २ मूढ २ लफ्टि २ मेह दवा पय स्वाहा ॥
ॐ उल्लिहिरण्य स्वर्णी धारे स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रा भरणाय स्वाहा ॥ ॐ अन्न पानाय स्वाहा ॥ ॐ वस्त्रमि
धानाय स्वाहा ॥ ॐ वस्त्र धारे स्वाहा ॥ ॐ वस्त्र धा विपलये स्वाहा ॥ ॐ वस्त्र धा स्वाहा ॥ ॐ गौ स्वाहा ॥ ॐ
सुरभ्ये स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ वांश्चिके स्वाहा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रनाय स्वाहा ॥ ॐ वैश्रव

वर्ष
१४

णाय स्वाहा ॥ ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा ॥ ॐ धनराधकाय स्वाहा ॥ ॐ कूवेराय स्वा
हा ॥ ॐ अग्नेय स्वाहा ॥ नैऋत्य स्वाहा ॥ ॐ वायुवे स्वाहा ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ॐ अन्ननाय स्वाहा
ॐ कूर्तिकाय स्वाहा ॥ ॐ वासुकीय स्वाहा ॥ ॐ सरवपाहाय स्वाहा ॥ ॐ भकाय स्वाहा ॥ ॐ महा
पद्माय स्वाहा ॥ ॐ कर्कटकाय स्वाहा ॥ ॐ पद्माय स्वाहा ॥ ॐ अश्वनागा विपलये स्वाहा ॥ ॐ अ
सुर विपलये स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ अश्वनागा विपलये स्वाहा ॥ ॐ

श्री

१५

दिशि लोकपाहाय स्वाहा ॥ नृविदिशि लोकपाहाय स्वाहा ॥ नृसर्वलोकपाहाय स्वाहा ॥ नृसर्वध
नधान्यसुवर्णनिधानिमांदेहि ददाय स्वाहा ॥ नृवसुधे स्वाहा ॥ वसुंधाधिपतये स्वाहा ॥ नृ
सर्वदेवाय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वनागाय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वयथाधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्व
भूताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वप्रेताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमादुताधिपतये नमः स्वा
हा ॥ नृपवनाधिपतये स्वाहा ॥ नृसर्वगुहाधिपतये स्वाहा ॥ नृसर्वपिशुंयाधिपतये नमः स्वा
हा ॥ नृसर्वमसुमादुताधिपतये नमः स्वाहा ॥ नृसर्वदुकिनीभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वपिशुंय

वर्त

॥ १५ ॥

निभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वयथानिभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमाहाकाशय नमः स्वाहा ॥ नृसर्वमातृभ्यो
नमः स्वाहा ॥ नृसर्वभूतादिभ्यो नमः स्वाहा ॥ नृसर्वभूतानिभ्यो नमः स्वाहा ॥ येन वां मम सर्वस
त्वा नां च धनधान्यसुवर्णनिधानिमांदेहि ददाय स्वाहा ॥ नृश्रीगुण्य वदो किते धराय
ह्र स्वाहा ॥ नृमनिषेह्र स्वाहा ॥ नृवज्रपा नये वज्रधराय ह्र स्वाहा ॥ नृऽमहज हरेन्द्राय ह्र स्वा
हा ॥ नृमानिभद्राय स्वाहा ॥ नृपूर्णभद्राय स्वाहा ॥ नृवैभवाय स्वाहा ॥ नृधनंदाय
स्वाहा ॥ नृसदाधनदाय स्वाहा ॥ नृनन्ददेवी नमः स्वाहा ॥ नृसुनन्ददेवी नमः स्वाहा ॥ नृभद्रा

5A
H9C

[illegible]

५४॥
१८॥

अवे स्वाहा ॥ इदं मन्त्रः ॥ ॐ एसात्मकेऽपत्रधूमेधूमसिखिले स्वाहा ॥ ॐ एवधारवसुधारेऽह
 जिप्रतिष्ठ वरुण वरुणा वतिप्रतिहमेचित् स्वाहा ॥ इदं कादूतिसर्वाथप्रयदिति ॐ अमर्त
 तिष्ठिस्त्रिस्वाहा ॥ क्रोधक वचयेष मन्त्र नमः ॥ इयं हि कूटपूत्रगृहपते वसुधा ए नाम धारणि
 मन्त्र पदा ॥ अस्या धारणाः प्रभावेण ऐगदूत्रिभ माकादपो न प्रभवन्ति यस्तु कूटपूत्रहमा
 नि वसुधारा नाम धारणी मन्त्र पदानि तथागता नाहती सम्यक् बुधानां पूजा कृत्वा षमासा नाव
 त्तयेत् ॥ ततः सिद्धे भवेति ॥ यस्यां दिशि इयं विद्या धार्यते सो दिक् पूज्यमाना भवति ॥ यस्मिं

॥ श्री ॥
॥ १५ ॥

स्वालो पूजातेषो विकारं स्वगुरुवा परगुरुवा अह्मपा वसुधा ए भगता रिका पा वा पदस्वा भगुतो
 १ नृपा सो र्ध चन्दनेन चतुरस्रं मन्दं कृत्वा पूष धूप दीप गन्ध माह्य विष्टे पत्र चूर्णे चीरार्द्र
 धज्जं च पातका पशो भित्तैर्वर्तितैश्च विविधोपचारैः यथा विभवै पूजा कृत्वा धर्म भाणा आ
 विसृज्य जहृ स्वातः स्वगन्धः पुचि वस्तु प्रावृत्तो मयुरा समो परि समुप विभूष पुतिमा पदादि
 कं स्थापयित्वा लभे वा नृसम्यक् सूर्यो द्या वेहा यां पूजायित्वा पुत्रह मखलु समदात ततो पाव दे वास
 तियमेन धारणी मविदिन मावर्तयेत् । श्रीनिवा एणिततः कृष्ट पूजो कृष्ट दूहितो वा माहा पूष

वसु ॥
१५ ॥

मात्रपा वसुधा एया गुरु पटि पूरयति । सर्व धन धान्य हि रण्य सूर्याः सर्वा पकरणे ॥ सर्व पदवा
 पय नाशयति । पहात ये व पुत्र्य वसु गन्ध जहृ स्वातः पुचि वस्तु चतो मयु वा न र हितो निहा मिखा
 हा वरा भोजी वृष चारि भूत्वा पोकि कार्थ स्वगुरुवा पर गुरुवा पुत्रस्थाने कोश कोशु गा र्वा च
 दनेन चतुरस्रं कृत्वा भगवतः श्री मदाया वतो किते ॥ स्वतथा गतस्य सर्व आवक पुत्र्ये क
 पुध पोधि सत्वा ना माहा मृदा मनु विद्या देवता पाप्मा गुतो यथा विभवै ॥ ५ ॥ पूजा कृत्वा सू स माहि
 तस्थामे व भगवती मा येनै क चित्तोत्पादो दान पति हित सूखा शय अउपासि नि दाता सि मां धार
 ॥ १५ ॥

॥ श्री ॥
॥ २० ॥

एषी मेकमहो एत्रं सप्रा हो एत्राणि पोर एनाद्य यत्रा विद्विन्मा वर्तयेत् । आचार्यः तथैव नियमेन स
गो लिं कुत्वा सर्वं वदन् पदार्थैः पूजयेत् ॥ तथैव दानं पतिरपि नियमेन सर्वमाचरेत् ॥ पाथका
यथाशुभं सुवर्णादिदानं दद्यात् ॥ नतः पठितं सिद्धु भवति नतः शरणमात्रमागुरु पतिवत्सु
एषा सहा पूरुष मात्रमागुरु परि परि पूरयति । सर्वधनधान्यद्विरूप सर्वैर्लुदिभिः सर्वोपकारो
पसर्वं पदुवांश्च नाशयति । तेन हित्वं गुरु पते सर्वं पुषन्नेनागुरु विषे मां वसंधारा नाम धारणा म
धारणी धारयेदशुभं ग्राह्यं पर्यवा पूहि परे भूष विस्तरेण प्रकाशयति ॥ ततो भविष्यति दीर्घं

वसु ॥
२० ॥

अमर्थापहिताय सुखाय भोजाय योः गसंभा एष सुभिः भाषयेति । ततः साधू भगवन्निति प्रतिष्ठा
भगवतोः सूचन्दो नाम गुरु पते भगवतोः निष्कादिमां वसंधारा नाम धारणी भूत्वा हस्तः तुष्ट ५६ ग
आत्मनाः पुनर्दिताः श्रीति हो मनस्य जातो भगवत्पराणां नियत्य कृतकरं पूढे भूत्वा भगवन्
मेतदबोचत् ॥ ५५ हित्ता मे भगवन्निति वसंधारा नाम धारणी पुष्टि कृता ॥ धारिता वाचिता पर्यवा
प्राः नमो दिता मनसा सुपरि चिन्तिता परे भूष विस्तरेण संप्रकाशयिष्यामिः । अथ तत्परा
एषा मेरा सूचन्दो गुरु पतयेः परिपूरी कोष्ठ कोष्ठ ग्राह्यं ॥ अथ खट्वं सूचन्दो नाम गुरु पते

॥ श्री ॥
॥ २१ ॥

भगवन्कमनेकदूतसहप्रदक्षिणीकृत्यभगवतः पादौ शिरसाभिवन्द्य भगवन्तपूजः पूजय
 हो किलेधरस्य भगवता दक्षिणास्वगृहे प्रकानः प्रकंस्य चस गृहपति एव नृप विष्णुदासी
 त्पदि पूर्णं सर्वधनधान्य एतज्जात समृद्धि सर्वोपकरोष्य कोशकोशु गाएनि च पदि पूर्णं निदुष्टं
 च विमलितो हृष्टतुष्ट उदगु आत्तमनाः प्रसूदिताः प्रीति सौमनस्य जातः पदि पूर्णं मनोऽर्थः पदि
 उदममाहो कुरु कुरु मृदु सिद्धि हृदयो वृद्ध भगवति वसुधाएनामधा एणी चली प्रेम गुह्यो
 एवं प्रसादवद्मान चित्रीकारं च बोधितस्तस्यादयति ॥ अथारब्ध भगवाना मूषकं सा नन्दमास

वसु ॥
२१ ॥

नृपतेस्य ॥ गदत्वमानन्दसुखदुःखगृहपते एगादि पदि पूर्णं सर्वधनधान्य समृद्धि सर्व एत सुवर्ण
 दिभिः सर्वोपकरोष्य कोशकोशु गाएनि च पदि पूर्णं निपश्य ॥ अथारब्ध मूषानानन्दो
 भगवतो वचनं पुतिप्रभयेन कोशाम्बी मस्तनगरी येन लेखदुःखगृहपते निवेगुनके नोपसङ्ग
 म्यो भगवन् विष्णुदासीन ॥ पदि पूर्णं सर्वधनधान्य समृद्धि एत समृद्धि मस्तकोशकोशु गाएनि
 दृष्ट हृष्टतुष्ट उदगु आत्तमनाः प्रसूदिताः प्रीति सौमनस्य जातः येन भगवानेनोपसङ्कान् उपस
 कृत्या मूषानानन्दो विस्मितः प्रीति सौमनस्य जातो भगवतः पादौ शिरसाभिवन्द्य भगवन्तमेतद

॥ श्री
॥ २२

वोचत् ॥ को भगवन् कः प्रत्ययो येन सूचयेतामा गुरुपतिर्महा भोगो महाकोशकोष्ठगारधनधा
न्यहिरन्यसुवर्गित्तजालसमृद्धजातः ॥ भगवानाह ॥ आह्वनन्दगुरुपतिः परमआहुः कल्या
णाप्रयोधारिताचलेनेयस्वसूधारनामधारणी प्रवर्तिताऽऽह्विताधारितावाचितापर्यनाप्रा
प्नुमोदितापरेभ्यश्चविस्तरेणैवकाहितेति । तेनानन्दत्वमप्यह्वितेमास्वसूधारनामधार
णीधारयेग्राह्यहोच्योदेश्यपर्यधापूहिपरिभ्यश्चविस्तरेणैवकाहितेनह्यविषयतिवह्नुज
नहितायैस्त्रुवायेहोकार्कपायेमहतीजनकायस्यार्थापहितायैस्त्रुवायेदेवानांचयस्यकृष्टपू

वर्त् ॥
२२ ॥

तस्यानन्दयंधारणीहृद्गतापूजकगताभुतिमात्रगताभविष्यति । ऽह्विताह्वयगतावाचिता
गुरुगतापूजितांचाभविष्यति । तस्यकृष्टेपूर्वस्य दुर्भिक्षभयं नभविष्यति । क्रमेणतस्यविज
याः समृद्धिर्नैवहृजनहितायवहृजनसुखायहोकार्कपायेमहतीजनकायस्यार्थापहिता
यैस्त्रुवायेदेवानांचयमनुष्णाणांच । नाह्वानन्दतर्धमसमनूपशान्तिसुदेवकेसमारकेसुवर्तके
सहस्रभूषणवस्त्रकायांप्रयांसुदेवमानुष्वायांपदमाविद्यामन्यथाकरिष्यति ॥ अतिक्रमिष्यति
वानैवस्थानंविद्यते ॥ तत्कस्यहेतोरेतेद्यानिर्भूतान्यानन्दवस्त्रधारनामधारणीमनुपदानि

॥ श्री ॥
॥ २३ ॥

न च तानि भूमीन कू सुहृ मूहानां अति पथमागमिष्यन्ति । कः पूनर्वा दोषानि पूस्तक गतानि ह
दय गतानि धा दयिष्यन्ति ॥ वाचयिष्यन्ति ॥ पर्यावाप्यन्ति ॥ लंक नस्य हेतोः ॥ सर्वसंथागतं
हते भाषिता अधिष्ठाता धारिता ह्यमृदु पा मृदिता प्रकाशिता । अनुमोदिता प्रभाविता प्रशस्त
संवाहिता विवृता उद्घाती कुला प्राप्ते चिता प्राख्याता दी दृष्टाणां सत्त्वानां नाना सर्वधा धि पारिषी
दिता नां सर्वं ददु भया पदताना मथा पक्षिता य सुखा य सौ भोगं परि भोगा य सौ मा य येति ॥ अने
दाह ॥ इति ह्येता मे भगवन्निर्णयसूधा एना मधारनीता वाचिता पर्यावाप्या अनुमोदिता मनसा

वसं ॥
२३ ॥

सूपादिचिन्किता च साधू भगवन्निति ॥ अथ खट्वा पूष्पाना नन्द उल्हासा सनादे काश मूला ए सगं
कुत्वा दृष्टि एतां नू मन्द हं पृथिव्यां पुतिस्थापयेन भगवां सेनां जतिं पुनं मय कृत कर पूढो भ
त्वा भगवन्क मय गु क्य तस्या देहायां मिमा गाथा मभाषत ॥ अचिन्क्यो दुःख समुदये सदा ॥
अनेकैर्न सस मृदु कां धरते ॥ प्रापूर ए सिद्धे भू मण्डले ॥ नमो सुते श्रीवसं धारणी सदा
अचिन्क्यो भगवां वृद्धे वृद्ध धर्मा अचिन्क्य ॥ अचिन्क्यो निपुर्ण नाग विपाक प्राप्ये चिन्क्य ॥ शा
स्ता ज्ञानय सर्वं स धर्मा एत परं परा । वार गामी कर्तुं प्राप्ते वृद्धे कीर नमो सुते ॥ ॥ अथ खट्वा पूष्पा

॥ श्री
॥ २५

जया धर्मनी चतुः श्री ३ वस्त्रं धारा देवीया पाथ पूषक सपू चोया हि धीका दिः न ज्ञेय ॥ १ ॥
व्यपूषक हो भयाकः वं च सहा पाप हारकः ॥ २ ॥ सन मौ ह ध्या वों ह ध्याः पाप हारकः ॥ ३ ॥
२००५ भाद्र कृत्ति चतुर्दशी ॥ शुक्रवार ॥ शुभ दीर्घ शुक्ल भाद्र चंद्रमान पाना
मं ॥ अमृत एत नं श्री ३ शुभ पूषक दान विद्या ज्ञेय ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

आशा आशीषि
ASHA ASHIS

५५६

I

वस्त्रं ॥
२५ ॥